जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
प्राकृत प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम

अवधि : 6 माह | प्रवेश पात्रता : साक्षर एवं 18 वर्ष की आयु

शुल्क : 500/– रूपये | माध्यम : हिन्दी

प्रथम पत्र: प्राकृत भाषा एवं अनुवाद रचना (CPKT)

कुल अंक : 100

संवर्ग–1. प्राकृत भाषा का उद्भव और विकास — 2 Credit

संवर्ग–2. प्राकृत व्याकरण की संक्षिप्त जानकारी — 2 Credit

1. स्वर 2. व्यंजन 3. स्वर परिवर्तन 4. व्यंजन परिवर्तन 5. संधि 6. शब्द रूप 7. धातु रूप
8. विशेषण 9. सर्वनाम 10. क्रिया विशेषण 11. उपसर्ग 12. संयोजक मूलक शब्द
13. विस्मयादि बोधक शब्द

संवर्ग–3. वाक्य रचना : 1. कारक/विभक्ति — 2 Credit
2. धातु प्रयोग

संवर्ग–4. अनुवाद : 1. अपठित प्राकृत अंश का हिन्दी अथवा अंग्रेजी में भाषान्तर (अनुवाद) — 2 Credit
2. अपठित अंश हिन्दी अथवा अंग्रेजी का प्राकृत में भाषान्तर (अनुवाद)

8 Credit

द्वितीय पत्र: प्राकृत काव्य साहित्य

ikb;xTt lxgk — कुल अंक : 50

संवर्ग–1. (अ) लोहस्स न अन्तो (उत्तराध्ययनसूत्र की सुखबोधाटीका) — 2 Credit
(ब) अमंगलिअपुरिसस्स कहा

संवर्ग–2. (अ) गामिल्लओ सागडिओ (मनोरमाकथा) — 2 Credit
(ब) चन्दणबाला कहा (मनोरमाकथा)
(स) जहा गुरू तहा सीसो (रयणचूडरायचरियं)

ikb;iTt lxgk — कुल अंक : 50

संवर्ग–3. (अ) उत्तरज्झयाणि–विनयसुयं (प्रथम 1–10 गाथाएं) — 2 Credit
(ब) चिंतामणिरयणदिट्टन्तो (कुम्मापुत्तचरियं गाथा 73–92)

संवर्ग–4. (अ) अगडदत्तचरियं (प्रथम 1–15 गाथाएं) — 2 Credit
(ब) पाइय कव्व पसंसा (संकलित 10 गाथाएं)
(वज्जालग्गं से गाथा 31, 28, 21 गउडवहो से गाथा 92, 93)
लीलावई से गाथा 44, कप्पूरमंजरी से गाथा)
कुवलयमाला कहा से गाथा, पंचमीमाहात्म्य से गाथा)
(स) पाइयसुहासिआवली (प्रो. जार्ल सरपेंटियर द्वारा सम्पादित)
उत्तराध्ययनसूत्र –प्रकाशक– अजय बुक सर्विस 704 चांदनी महल दरियागंज,
दिल्ली.110 002 (1990) के अन्तर्गत टीकाकार देवेन्द्रमणि द्वारा रचित गाथाएं)

कुल योग (8 + 8) = **16 Credit**